B.A. History Hon's, Part-II
Paper: III, Unit: II, Date: 30.09.2020 Lecture No: 28

Session: बलबन

बलबन ईल्बरी कबीले का तुर्क था। युवावस्था में ही बलबन को मुगलों ने पकड़ लिया था और बगदाद ले गए थे। बसरा के ख्वाजा जलालुद्दीन ने उसको खरीद लिया था। ख्वाजा साहब ने उसको शिक्षित करके 1232 ई० में इल्तुतमिश के हाथ बेच दिया था। बलबन के प्रतिभा से प्रभावित होकर सरकार ने खास सरदार बना लिया था। चालीस गुलामों का सरदार बन गया, परन्तु कुतुबुद्दीन के समय में सुल्तान के नाराज होने के कारण उसको कारागार में भेज दिया गया था। बहराम शाह के शासन काल में उसे रेवाड़ी तथा हाँसी की जागीरें मिली और 'अमीर आखुर' के पद पर नियुक्त किया गया। नासिरुद्दीन की उसके सहायता की और उसी के बदले वह नासिरुद्दीन का 'नायब-ए-मुमलिकन' बना दिया गया। 1249 ई० में सुल्तान ने बलबन की कन्या से विवाह किया और बलबन को 'उलुगखाँ' की उपाधि प्रदान की। दरबार के अमीरों ने उसके विरुद्ध सुल्तान का कान भरा। फलतः सुल्तान ने उसको राजधानी से निकाल दिया और हाँसी के जागीर में भेज दिया। परन्तु राज कार्य बिगड़ने से 1254 ई० में उसे वापस बुला लिया। सुल्तान नासिरुद्दीन की मृत्यु के बाद 1266 ई० में बलबन सुल्तान बन गया। उसने निम्न महत्वपूर्ण कार्य किये-

• अमीरों तथा सरदारों के साथ कठोर व्यवहार: उसने गद्दी पर बैठते ही बहुत से अमीरों तथा सरदारों से मुफ्त में दी गई जागीरें छीन ली। उसने ऐसा जागीर छीन लिया जिनके स्वामी बच्चे, स्त्रियाँ तथा बूढ़े व्यक्ति थे।

•• उलमाओं तथा मुल्ला मौलवियों को राजनीति से अलग रखना: गद्दी पर बैठते ही उसने मुल्ला को आदेश दिये कि वे अपने धार्मिक कार्यों को ही करें। उन्हें राजनीति में हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है। उनका कार्य जनता को धर्म की शिक्षा देना है। इस प्रकार सभी मुल्ला तथा मौलवी इस बात के लिये सचेत हो गए। जिन उलमाओं ने उसकी आज्ञानुसार कार्य नहीं किया उन्हें सख्त सजायें दी गई। उनको राज्य की ओर से दी गई सभी सुविधाएँ वापस ले लिया। बहुत से उलमाओं को राज्य से निकाल दिया गया।

••• विद्रोहियों का कठोरता से दमन: उसने विद्रोहियों के साथ किसी प्रकार का दया नहीं दिखाई। उसने विद्रोह को दृढ़ता से दबा दिया। उसने मेवातियों, दोआब के हिन्दुओं, कटेहर के विद्रोहियों के साथ कठोरता का व्यवहार किया। मंगोलों के विरुद्ध उसने ऐसी नीति अपनाई की उसके राज्य के अन्त तक मंगोल दबे रहे।

शासन प्रबन्ध: वह एक कुशल तथा योग्य शासन प्रबन्धक भी था। उसे राज कार्य का बहुत अनुभव था। वह नासिरुद्दीन के काल में उसका प्रधानमंत्री रह चुका था।

• सुल्तान का पद: उसने सुल्तान के पद को ईश्वरीय माना। उसका विश्वास था कि सुल्तान में दैवी शक्ति का अंश विद्यमान है। वह अपने ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था तथा उसके प्रति उत्तरदायी समझता था।

बलबन का दरबार: बलबन के दरबार की गणना एशिया के प्रसिद्ध दरबारों में की जाती थी। उसने अपने दरबार को बहुत अधिक भव्य तथा सुशोभित किया। वह कभी दरबार के अन्दर किसी को हँसने नहीं देता था। वह दरबार में गम्भीरता की मूर्ति की तरह बैठा करता था। वह नीच कुल के लोगों से घृणा करता था। वह नीच कुल के व्यक्तियों को चाहे वे कितने ही योग्य हो ऊँचे पद पर नहीं देता था। दरबार इतना भव्य तथा आकर्षक था कि लोग दूर-दूर से देखने के लिए आते थे।

सैनिक प्रबन्ध: जिस समय बलबन गद्दी पर बैठा तो सुल्तान के राज्य को आंतरिक तथा वाह्य खतरा था। राज्य का भय लोगों के दिल से निकल गया था। राजपूत तथा अन्य मुसलमान सरदार अपने-अपने राज्यों के निर्माण में लगे हुये थे। मुगलों का भय भी बहुत था। उसने एक सुसज्जित, सुसंगठित तथा विशाल सेना का निर्माण किया। उसके इस कार्य में इमादुल मुल्क ने विशेष रूप से सहयोग प्रदान किया। उसने सेना में कठोर अनुशासन स्थापित किया।

भूमि की व्यवस्था: बलबन ने भूमि की व्यवस्था को भी उन्नत करने की ओर ध्यान दिया। इसके अभाव में एक कृषि प्रधान देश में सुख समृद्धि तथा शांति की स्थापना करना संभव न था। बलबन से पहले सुल्तानों ने अमीरों तथा जागीरदारों को उनकी सेवा के बदले में जागीरें प्रदान की थी। सुल्तान ने ऐसी जागीरें जिनके संरक्षक बालक, वृद्ध तथा स्त्रियाँ थी छीन ली तथा उन्हें योग्य व्यक्तियों में वितरित कर दी।

न्याय व्यवस्था: वह बहुत ही न्याय प्रिय सुल्तान था। अपराधियों को कठोर दण्ड दिये जाते थे। अपराधी के साथ किसी प्रकार की दया नहीं दिखायी जाती थी। वह न्याय का गला कभी नहीं घोंटता था।

आंतरिक व्यवस्था: चालीस गुलामों के दल ने आंतरिक नीति में बड़ी हलचल मचा रखा था। उनका प्रभाव बलबन से पूर्व वाले सुल्तानों पर अधिक थे। वे राजनीति के महत्वपूर्ण मोहरे थे। बलबन ने इन चालीस गुलामों के पक्ष का कठोरता से दमन किया। जिसका परिणाम यह हुआ कि उसकी अपरिमित तथा निरंकुश शक्ति का विरोध करने वाला कोई न रहा और वह निष्कंटक रूप से शासन करने लगा।

मंगोलों के विरुद्ध कठोर शासन: उसने मंगोलों के विरुद्ध बड़े कदम उठाये। उसने लाहौर पर अधिकार किया, पुराने दुर्गों की उसने मरम्मत करवाई तथा नए दुर्गों का निर्माण कराया।

इस प्रकार उसने शासन व्यवस्था की उन्नति कर तुर्की साम्राज्य को दृढ़ स्वरूप प्रदान कर शांति तथा सुव्यवस्था की स्थापना की।

डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर